RNI No. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

20

सृजन सरोकार

वर्ष 7 / अंक 2–3 / जनवरी-जून 2024

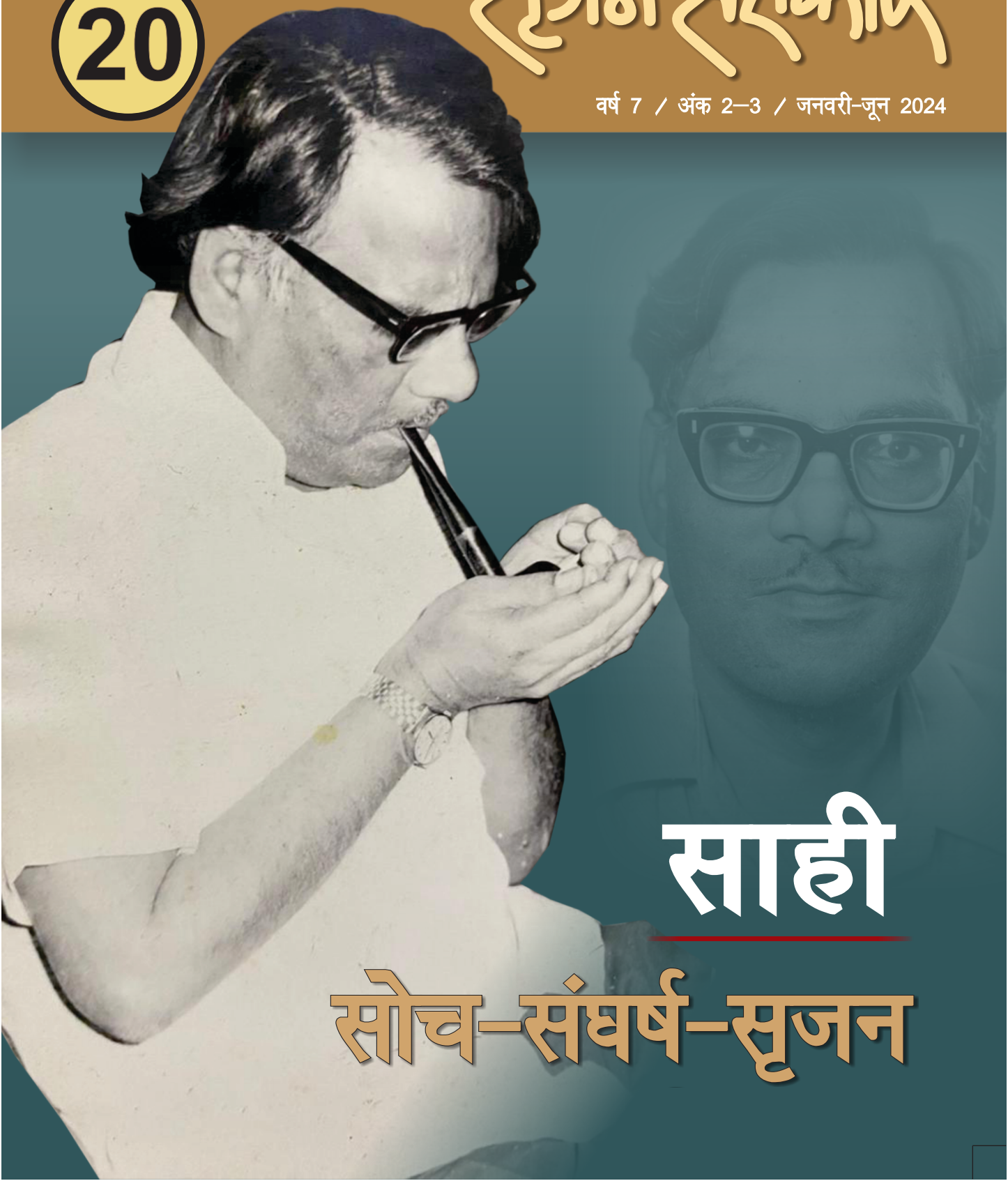

साही

सोच-संघर्ष-सृजन

notnul.com
पर भी उपलब्ध

सृजन सरोकार

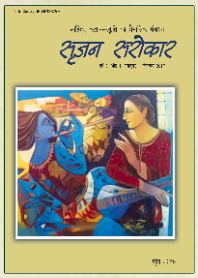

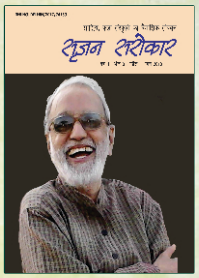
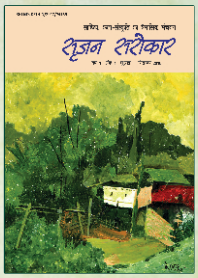
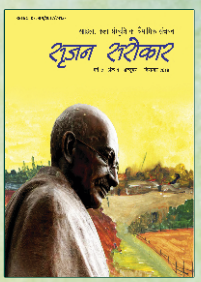
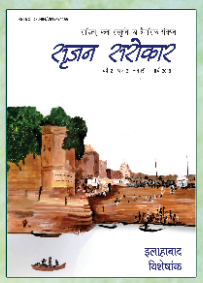

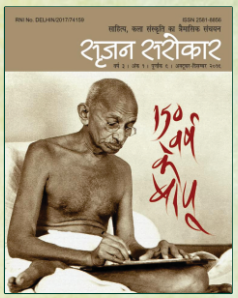

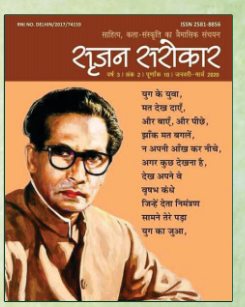

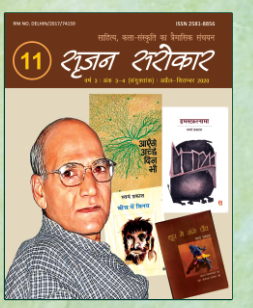

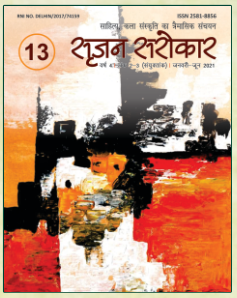

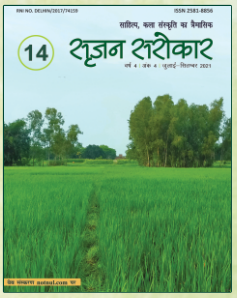

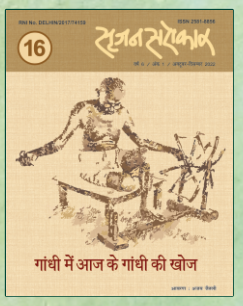

व्यक्तियों के लिए : **320** रुपए (वार्षिक)

संस्थाओं के लिए : **600** रुपए (वार्षिक)

शृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु
एक वर्ष का डाक खर्च 160 रुपए अतिरिक्त

सौजन्य सदस्यता : **5000** रुपए

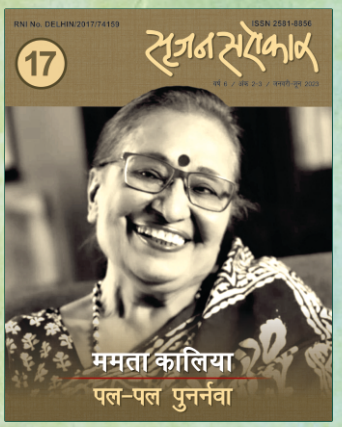

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063

मो.नं. : +91-95554 12177, +91-94156 46898

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 7 | अंक 2–3 | जनवरी–जून 2024 (संयुक्तांक)

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

कार्यालय
G.H.-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

RNI NO. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 7 | अंक 2–3 | पूर्णांक 20 | जनवरी–जून 2024

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

सम्पादक मंडल

प्रो० कृष्णचन्द्र लाल
kclal55@gmail.com

प्रो० अजय जैतली
ajayjaitly@gmail.com

डॉ. सुभाष राय
raisubhash953@gmail.com

प्रो० मिथिलेश
onlymithilesh@gmail.com

अरविन्द कुमार सिंह
arvindksinghald@gmail.com

आवरण : अजय जैतली

मुद्रक-प्रकाशक
उमा शर्मा रंजन

संपादन सहयोग
अवनीश यादव

कला पक्ष
द पर्पल पेपर, नई दिल्ली

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
फोन : +91-11-4007 9949
मो.नं. : +91-95554 12177, +91-94156 46898
ईमेल : srijansarokar@gmail.com,
granjan234@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 180 रुपए

व्यक्तियों के लिए : 320 रुपए (वार्षिक)
संस्थाओं के लिए : 600 रुपए (वार्षिक)
सृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु एक वर्ष का डाक खर्च 160 रुपए अतिरिक्त
सौजन्य सदस्यता : 5000 रुपए

notnul.com और srijansarokar.page पर भी उपलब्ध

शुल्क सृजन सरोकार के नाम से निम्नलिखित खाते में भेजें
Bank Name : The Nainital Bank Ltd., New Delhi
A/C No. : 0492000000012646
IFSC : NTBL0DEL049

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमा शर्मा रंजन द्वारा
एस.आई. प्रिंटर्स, 1534, कासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान,
दिल्ली–110006 से मुद्रित एवं
GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित
सम्पादक :*गोपाल रंजन

संचालन संपादन अवैतनिक

सभी विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन।
प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
*सामग्री चयन के लिए पीआरबी एक्ट–1867 के तहत जिम्मेदार

अनुक्रम

अपनी बात

बहस करता आदमी 4

संस्मरण

खौलते कड़ाह में दोनों हाथ–अशोक वाजपेयी 5
साही : अध्यापक भी गुरु भी–हेरम्ब चतुर्वेदी 9
जीवनशिल्पी साही–सुस्मिता साही श्रीवास्तव 15
वी.डी.एन. : जैसा देखा, जैसा पाया–
संजय सक्सेना 27
साही की यादें एक बहस करते आदमी का
जीवन–अरविंद त्रिपाठी 34

साही–स्मृति/सहयात्री

अपनी भी यह छोटी सी मौत–
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 43
साही : मेरे सहयात्री–जगदीश गुप्त 45
उसने कहा था : एक संस्मरण–धर्मवीर भारती 48
सड़क साहित्य–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 52
'ओ परिचित क्या कहूँ?'–वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य 55
साहीजी! मेरे गुरु मेरे रहनुमा–मिर्जा यूसुफ बेग 59
कविता के बहाने एक सही आदमी पर बहस–
कुँवर नारायण 67

आलेख

'समसामयिकता' 'नितांत समसामयिकता' और
'नैतिक दायित्व'–राजेन्द्र कुमार 72
मछलीघर– विजयदेव नारायण साही–नागेश्वर लाल ... 78
लोकतांत्रिक समाजवाद के व्याख्याता आलोचक–
चित्तरंजन मिश्र 86
कबीरियत की बलवती स्पृहा...–पी. रवि 92
विकल्प के इंतज़ार में कविता–के. जी. प्रभाकरन 97
साही की आलोचना दृष्टि : मनुष्यता के पक्ष में
उठाया गया हलफ़नामा–अरविंद त्रिपाठी 104
साही जी का काव्य संसार–
सुस्मिता साही श्रीवास्तव 123
शमशेर और साही–कृष्ण मोहन 141
नई कविता की मनोभूमि और *मछलीघर*–
विनोद तिवारी 150
साही की मनोभूमि का गढ़न : कुछ बिंदु–
चरणसिंह अमी 158
साही के जायसी: सँवरे हुए दो बोल–मिथिलेश 169
विजयदेव नारायण साही की दृष्टि–परिचय दास 177
सती के 'सत की परीक्षा'–सुजीत कुमार सिंह 192
युग के अंतर्विरोधों से विद्ध प्रार्थना–
विंध्याचल यादव 196
आलोचना दृष्टि में इतिहास बोध–प्रतिमा प्रसाद 200
आलोचना की रचना–धारवेंद्र प्रताप त्रिपाठी 207
अपराजेय संवादधर्मी जीवटता के प्रतिमूर्ति–
केतन यादव 210

कविता

विजयदेव नारायण साही की कविताएँ 215

विवेचना प्रकरण

''न पढ़ा है, न पढ़ूँगा''–सुस्मिता साही श्रीवास्तव ... 220

लक्षित–अलक्षित

धूसर परीक्षण में पंख खोल जीने वाले बहसप्रिय–
लोकप्रिय चिंतक अध्यापक साही–
कुमार वीरेन्द्र 234
विजयदेव नारायण साही जी की छवियाँ 239

अपनी बात

बहस करता आदमी

साही की छवि बहस करने वाले आदमी की है। वे सार्थक साहित्य के पक्ष में बहस करते हैं, आख़िरी पायदान पर खड़े आदमी के पक्ष में बहस करते हैं : न केवल बहस करते हैं, मैदान में उतर कर संघर्ष भी करते हैं। उन्हें चुप्पी नापंसद है लेकिन विडम्बना यह है कि साहित्य के इस पुरोधा के शताब्दी वर्ष में साहित्य जगत् में चुप्पी छाई रही, उनके शहर इलाहाबाद तक ने उन्हें याद नहीं किया। ऐसे व्यक्ति की अनुपस्थिति जो अपनी उपस्थिति से पूरे वातावरण को आंदोलित करता था, पुरखों के प्रति हमारे नज़रिया को दर्शाता है। आलोचक-चिंतक अशोक वाजपेयी का यह कहना कि साही के निधन के बाद और उनके शताब्दी वर्ष के बीच पूर्वग्रह के अलावा किसी पत्रिका ने विशेषांक नहीं प्रकाशित किया, इस उपेक्षा पूर्ण रवैय्ये को दर्शाता है, हालाँकि राजेन्द्र कुमार ने अभिप्राय का विशेषांक निकाला था परंतु उसके बाद एक लंबी चुप्पी नज़र आती है। साही पर चुप्पी के कारणों की हमें ज़रूर पड़ताल करनी चाहिए क्योंकि साही जैसा व्यक्ति जो हर अन्याय के खिलाफ पूरे क़द में खड़ा हुआ जिसने अपने सम्मान के साथ श्रम करने वाले हर व्यक्ति के सम्मान की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहा, उस व्यक्ति को कहीं उसकी वैचारिक पक्षधरता के कारण हाशिए पर डालने की कोशिश तो नहीं हुई।

साही के व्यक्तित्व की विशेषता की बात करें तो उसमें उनका बुनकरों के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना, अध्यापक के अपने कर्त्तव्य को सुचारू रूप से निर्वहन करना, अपने पक्ष को निर्भीक और पूरी ताक़त से उठाना, लेखन को हथियार बनाना और इस सबके बीच परिवार के दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाना उनके 'तेजस्विता में तरलता' की उपस्थिति को दर्शाता है। हम उनके जीवन के एक-एक पक्ष की बात करें तो उनपर अलग-अलग ढंग से शोध करने की ज़रूरत है। भविष्य में साही जी के बहाने उस दौर के साहित्य आंदोलनों पर काम होने की उम्मीद इसलिए जाग रही है कि उनसे जुड़े लोग अब सक्रिय होने लगे हैं। लेकिन साही जी के क़द को देखते हुए कहा जा सकता है कि अभी बहुत ही कम है, बहुत कम।

सृजन सरोकार ने यह अंक प्रकाशित करने की प्रक्रिया के दौरान यह महसूस किया कि केवल साही ही नहीं, परिमल से जुड़े लेखकों, कवियों को बाद के दिनों में उस शहर ने ही याद नहीं किया जिस शहर में उनके न होने का अहसास क़ई क्षेत्रों में बड़ी शिद्दत से महसूस होता है। कॉफ़ी हाउस की कुर्सियाँ, शहर में होने वाली गोष्ठियों में बहसों का अभाव और शोषण तथा अन्याय के खिलाफ संघर्ष में बौद्धिकों की ग़ैर मौजूदगी इस कमी को खुलकर दर्शाती हैं। वैसे सच तो यह है कि इलाहाबाद के पानी में वह धार ही नहीं रही जो अपने साथ पूरे बौद्धिक परिवेश को बहाकर ले जाती थी। शहर कंक्रीट का जंगल बन गया है और यहाँ के प्राणी बेजान पत्थर। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सराहना मैं ज़रूर करना चाहूँगा जिसने अपने पुराने वैभव की वापसी के लिए गंभीर जतन करना शुरू कर दिया है।

इस अंक के प्रकाशन में विलम्ब हुआ जिसका हमें खेद है लेकिन कुछ ऐसी समस्याएं सामने आईं जिनका सामना हर सार्थक काम करने वाले को करना पड़ता है। हमारे लेखकों-ख़ासकर अशोक वाजपेयी, राजेन्द्र कुमार, अरविन्द त्रिपाठी और साही जी की बेटी सुस्मिता साही श्रीवास्तव का योगदान उत्साहवर्धक रहा। कुमार वीरेन्द्र ने अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद एक बेहतर अंक को पूर्णता की ओर पहुँचाने में जी-तोड़ मेहनत की। अजय जैतली के आवरण चित्र ने अंक को जीवंत बनाया। अंत में सभी लेखकों, पाठकों का आभार!